# शबे तार

यानी

# अँधेरी रात


लेखक

मॉरिस मेटरलिंक

अनुवादक

प्रेमचंद



हंस प्रकाशन

इलाहाबाद

प्रकाशक
हंस प्रकाशन, इलाहाबाद

मुद्रक
भार्गव प्रेस, इलाहाबाद

आवरण
कृष्ण चंद्र श्रीवास्तव

मूल्य
मूल्य तीन रुपया

# दो शब्द

प्रस्तुत नाटक सितम्बर-अक्तूबर १६१६ के 'जमाना' में निकला था।

इस सन्दर्भ में मुंशी प्रेमचंद का ५ सितम्बर का यह पत्र, जो उन्होंने 'जमाना' के सम्पादक को लिखा था, द्रष्टव्य है—

" 'शबे तार' का बक़िया हिस्सा रवाना करता हूँ। मेटरलिक का एक ड्रामा Sightless नाम का है। Scott Library के सिलसिले में मिलेगा। उसमें एक ड्रामा और भी है। उसका नाम Pelleas and Melisanda है। मैं उसे हिन्दी में तर्जुमा कर रहा हूँ। ये किताबें मुझे बहुत पसन्द हैं। यह ड्रामा खत्म हो जाये तो आपके पास भेज दूँ। मैंने हरचंद कोशिश की कि इस Allegory को सुलझाऊँ लेकिन पूरी कामयाबी नहीं हुई। 'शबे तार' का हिन्दी एडीशन मय दीबाचे के शाया हो रहा है लेकिन वह दीबाचा कुछ गोलमोल है।"

'शबे तार' का हिन्दी एडीशन कहीं देखने में नहीं आया। पता नहीं छपा भी, या सिर्फ़ बात होकर रह गयी। पुस्तक रूप में तो शायद वह उर्दू में भ नहीं निकला।

Pelleas and Melisanda का अनुवाद उर्दू या हिन्दी किसी भाषा में अब तक प्राप्त नहीं हो सका, न 'जमाना' में न किसी दूसरे उर्दू या हिन्दी पत्र में और न पुस्तकाकार।

'शबे तार' ज्यों का त्यों अपने उर्दू रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है — हाँ, कठिन शब्दों का अर्थ फ़ुटनोट में दे दिया गया है।

अमृतराय

# लेखक परिचय

मेटरलिंक, बेल्जियम का जिन्दा-जावेद[१] ड्रामेटिस्ट, शायर और मजमूननिगार[२], नोबेल प्राइज का इफ़्तखार[३] हासिल कर चुका है। उसके ड्रामों में तसव्वुफ़[४] का रंग ग़ालिब है, लेकिन वह तसव्वुफ़ नहीं जो शीशा-ओ-शराब,[५] जिन्दाँ-ओ-क़फ़स[६] और हिज्र-ओ-विसाल[७] के तखैयुल[८] में मस्त रहता है, बल्कि वह तसव्वुफ़ जो रूहानी मसले,[९] आरिफ़ाना नुकात,[१०] हयात[११]-ओ-ममात[१२] के असरार,[१३] वुजूद[१४] की माहीयत[१५] का मुफ़स्सिर[१६] और मुबस्सिर[१७] है। वह अकसर ऐसी रूहानी बलंदियों पर जा पहुँचता है जहाँ आम शोअरा[१८] के तायरे-परवाज[१९] के पर जलते हैं। और वह महज समाई[२०] बातें नहीं लिखता, उसकी निगाहे-बातिन[२१] रौशन है। उसने रूहानी मुशाहिदात[२२] किये हैं और इस रंग में योरप उसका सानी[२३] नहीं रखता।

प्रेमचंद

---

१ अमर २ निबंधकार ३ गौरव ४ अध्यात्म ५ शीशे और शराब ६ पिंजरे और क़ैदख़ाने ७ संयोग-वियोग ८ कल्पना ९ आत्मा के प्रश्नों १० ज्ञान के तत्वों ११ जीवन १२ मृत्यु १३ रहस्यों १४ अस्तित्व १५ विवेचना १६ भाष्यकार १७ मर्मज्ञ १८ कवियों १९ कल्पना-पंछी २० सुनी हुई २१ भीतर की आँख, ज्ञान-चक्षु २२ साक्षात्कार २३ समकक्ष

# शबे तार

यानी

# अँधेरी रात

( मंज़र[१] — एक बहुत पुराना खित्तए-शुमाली[२] का जंगल जिससे क़िदम[३] के आसार[४] नुमायाँ[५] हैं। आसमान तारों से पुर[६]। जंगल के वस्त[७] में, आधी रात के क़रीब, एक बुड्ढा दरवेश[८] स्याह लबादा ओढ़े बैठा हुआ है। उसका सर और जिस्म का बालाई[९] हिस्सा जो किसी क़दर पीछे को झुका हुआ और बिलकुल बेहिस-ओ-हरकत[१०] है, एक शाहबलूत के दरख़्त से टिका हुआ है। यह दरख़्त बड़ा झंखाड़ और छतनार है। उसका चेहरा बिलकुल ज़र्द है। उस पर ख़ाक की-सी बेरंगी छायी हुई है और उसके नीले होंठ खुले हुए हैं। उसकी जामिद[११] और पथरायी हुई आँखें अबद[१२] के वुजूदे-ज़ाहिर[१३] की तरफ़ नहीं देखतीं और ग़महाए-देरीना[१४] से ख़ूंफ़िशाँ[१५] मालूम हो रही हैं। उसके नूरानी[१६] और सफ़ेद बाल उसके चेहरे पर बिखरे हुए हैं जो इस सहराए-तारीक[१७] की तमाम चीज़ों से ज़्यादा मुज़महिल[१८] और रौशन है। उसके निहायत लाग़र हाथ उसके सीने पर अकड़े हुए पड़े हैं। उसके दाहिने जानिब छः बुड्ढे और अंधे आदमी चट्टानों, सूखी पत्तियों और दरख़्तों के ठूँठों पर बैठे हुए हैं। बायीं तरफ़, उनके मुक़ाबिल छः बूढ़ी अंधी औरतें बैठी हुई हैं। दर्मियान में एक गिरा हुआ दरख़्त और पत्थर के टुकड़े हायल हैं। तीन अंधी औरतें एक ग़ैर-मुअस्सिर[१९] अंदाज से दुआ कर रही हैं और रो रही हैं। एक औरत निहायत किब्र-सिन[२०] है। पाँचवीं औरत गूँगी और पगली है। उसकी गोद में एक छोटा-सा लड़का सो रहा है। छठवीं औरत अभी नौजवान है और उसके लंबे-लंबे बालों से उसका सारा जिस्म ढंका हुआ है। मर्द और औरतें सब के सब एक ही क़िस्म के स्याह और

---

१ दृश्य २ उत्तरी प्रदेश ३ प्राचीनता ४ लक्षण ५ सुस्पष्ट ६ भरा हुआ ७ मध्य ८ संन्यासी ९ ऊपरी १० निश्चल-निस्पंद ११ स्थिर १२ सनातनकाल १३ प्रत्यक्ष अस्तित्व १४ पुराने ग़मों १५ खून बरसाती हुई १६ दीप्तिमान १७ अँधेरे जंगल १८ थका हुआ, उदास १९ प्रभावशून्य २० बुड्ढी

ढीले-ढाले कपड़े पहने हुए हैं। उनमें से अकसर कुहनियाँ घुटनों पर रक्खे हुए और चेहरों को हाथों से छिपाये हुए सूरते इंतज़ार बैठे हैं। ऐसा मालूम होता है कि वह इशारे और अंदाज़ की आदत को भूल गये हैं। वह इस जज़ीरे के पैहम[१] शोरो-गुल पर ज़रा भी सर नहीं हिलाते। बड़े-बड़े मातमी दरख़्त अज़-क़िस्म[२] देवदार व बलूत व सनोबर उन्हें अपने तारीक[३] और वफ़ादार साये में छिपाये हुए हैं। साधू से थोड़ी दूर पर लंबे-लंबे ज़र्द नर्गिसों के फूल खिले हुए हैं। बावजूदे कि कहीं चाँद की किरनें पत्तियों से छन-छनकर ज़मीन पर आती हैं और तारीकी[४] को हटाने की कोशिश करती हैं, फिर भी जंगल में अमीक़[५] तारीकी छायी हुई है।)

**पहला नाबीना[६]**

क्या वह अभी नहीं आ रहे हैं?

**दूसरा नाबीना**

तुमने मुझे जगा दिया।

**पहला नाबीना**

मैं भी सो गया था।

**तीसरा नाबीना**

मैं भी सोता ही था।

१ तमाम २ जैसे ३ अंधकारपूर्ण ४ अंधकार ५ गहरा ६ अंधा आदमी

**पहला नाबीना**

क्या वह अभी नहीं आ रहे हैं ?

**दूसरा नाबीना**

मुझे किसी के आने की आहट नहीं मिलती।

**तीसरा नाबीना**

अब खानक़ाह[1] में लौट जाने का वक़्त क़रीब होगा।

**पहला नाबीना**

हम यह जानना चाहते हैं कि हम कहाँ हैं ?

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

कोई जानता है कि हम कहाँ हैं ?

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

हम बहुत देर तक चलते रहे थे। हम ज़रूर खानक़ाह से बहुत फ़ासले पर हैं।

**पहला अंधा आदमी**

ओ हो, क्या औरतें हमारे मुक़ाबिल हैं ?

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

हाँ, हम तुम्हारे सामने बैठी हुई हैं।

**पहला अंधा आदमी**

ठहरो, मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ। ( वह उठकर इधर-उधर टटोलता है। ) तुम कहाँ हो ? बोलो, ताकि मुझे आवाज़ से कुछ पता चले।

---

१ मठ या आश्रम

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

हम यहाँ पत्थरों पर बैठी हुई हैं।

**पहला नाबीना**

(वह आगे बढ़ता है और गिरे हुए दरख़्तों और चट्टानों से ठोकर खाता है।) हमारे दर्मियान कुछ हायल[१] है।

**दूसरा नाबीना**

जहाँ बैठे हो वहीं बैठे रहो। यह बेहतर है।

**तीसरा नाबीना**

तुम कहाँ बैठे हो? क्या हमारे पास आना चाहते हो?

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

हम खड़ी नहीं हो सकतीं।

**तीसरा नाबीना**

इन्होंने हम लोगों को अलग-अलग क्यों कर दिया?

**पहला नाबीना**

मुझे औरतों की तरफ़ से दुआ करने की आवाज़ आ रही है।

**दूसरा नाबीना**

हाँ, तीनों बुड्ढी अंधी औरतें दुआ कर रही हैं।

**पहला नाबीना**

लेकिन यह तो दुआ करने का वक़्त नहीं है।

**दूसरा नाबीना**

तुम लोग बावर्चीख़ाने में जाकर नमाज़ पढ़ना।

१ मध्यवर्ती बाधा

( तीनों औरतें बदस्तूर दुआ करती रहती हैं। )

**तीसरा नाबीना**

मैं यह मालूम करना चाहता हूँ कि मैं किसके क़रीबतर बैठा हुआ हूँ।

**दूसरा नाबीना**

शायद मैं तुमसे क़रीब हूँ।

**तीसरा नाबीना**

हम एक दूसरे से मिल नहीं सकते।

**पहला नाबीना**

लेकिन हमारे दर्मियान ज़्यादा फ़ासला नहीं है ( वह इधर-उधर हाथों से टटोलता है। उसकी छड़ी से पाँचवें अंधे को चोट लग जाती है और वह कराह उठता है। ) बहरा हमारे क़रीब बैठा हुआ है।

**दूसरा नाबीना**

मुझे सब आदमियों की आवाज़ें नहीं सुनायी देतीं। हम कुल छः आदमी थे।

**पहला नाबीना**

मुझे अब कुछ-कुछ हक़ीक़त खुलने लगी है। औरतों से भी पूछ लेना चाहिए। यह ज़रूरी है कि हम सूरते-हाल[१] से वाक़िफ़[२] हो जायें। अभी तक तीनों औरतों की दुआख़्वानी[३] की आवाज़ मेरे कान में आ रही है। क्या वह एक ही साथ बैठी हुई हैं ?

---

१ परिस्थिति २ परिचित ३ प्रार्थना करने

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

वह मेरी बग़ल में एक चट्टान पर बैठी हुई हैं।

**पहला नाबीना**

मैं मुर्दा पत्तियों पर बैठा हुआ हूँ।

**तीसरा नाबीना**

और वह हसीना कहाँ है ?

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

वह उन दुआ करनेवाली औरतों के क़रीब बैठी हुई है।

**दूसरा नाबीना**

वह पगली और उसका बच्चा कहाँ है ?

**नौजवान अंधी औरत**

वह सो रहा है, उसे न जगाओ।

**पहला नाबीना**

उफ़ ! तुम हम लोगों से कितनी दूर हो ? मैंने समझा था कि तुम मेरे ऐन मुक़ाबिल हो।

**तीसरा अंधा**

अब हमें बेशतर ज़रूरी बातें मालूम हो गयी हैं। अब आओ, कुछ बातचीत करें। उस वक़्त तक साधूजी भी लौट आयेंगे।

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

उन्होंने हमसे कहा था कि खामोशी के साथ मेरा इंतज़ार करना।

**तीसरा नाबीना**

हम इबादतख़ाने[१] में नहीं हैं कि ख़ामोश बैठें।

**बुड्ढी अंधी औरत**

तुम क्या जानते हो कि हम कहाँ हैं ?

**तीसरा नाबीना**

मुझे बिला बात किये ख़ौफ़ मालूम होता है।

**दूसरा नाबीना**

तुम्हें मालूम है कि साधूजी कहाँ गये हैं ?

**तीसरा नाबीना**

मुझे ऐसा मालूम होता है कि उन्हें ज़रूरत से ज़्यादा देर हो रही है।

**पहला नाबीना**

अब वह ज़ईफ़ हो गये हैं। मुझे मालूम होता है कि कुछ दिनों से उन्हें खुद भी कुछ नहीं सूझता। वह इसका इज़हार नहीं करते, इस ख़ौफ़ से कि उनकी जगह पर हमारा कोई दूसरा निगराँकार[२] आ जायेगा। लेकिन मुझे शुबहा होता है कि अब उनकी आँखें बेकार हो गयी हैं। अब हमें किसी दूसरे रहनुमा की ज़रूरत है। वह अब हमारी बातों की परवाह नहीं करते। हमारी तादाद भी अब ज़्यादा हो गयी है। यहाँ उनके और जतियों-बैरागियों के सिवा और कोई बीना[३] नहीं। और वह लोग हमसे भी ज़्यादा ज़ईफ़ हैं। मुझे यक़ीन है कि महात्माजी हमें लेकर कहीं भूल आये हैं और अब रास्ता ढूँढ़ रहे हैं। वह

१ उपासना-गृह २ निगरानी करनेवाला ३ आँखवाला

कहाँ गये ? उन्हें कोई मजाज़ नहीं है कि हमको तनहा छोड़ जायें।

**सबसे बुड्ढा अंधा आदमी**

वह बहुत दूर गये हैं, शायद औरतों से इसका ज़िक्र किया था।

**पहला नाबीना**

तो अब वह औरतों ही से बोलते हैं ? गोया हम सब के सब मर गये। बिल आख़िर हमें उनकी शिकायत करनी पड़ेगी।

**सबसे बुड्ढा अंधा आदमी**

किस से शिकायत करोगे ?

**पहला नाबीना**

अभी यह नहीं मालूम है। ख़ैर, देखा जायगा। लेकिन वह गये कहाँ ? मैं औरतों से पूछ रहा हूँ।

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

वह इतनी दूर आते-आते थक गये थे। मुझे खयाल आता है कि वह ज़रा देर तक हमारे दर्मियान बैठे थे। कई दिनों से वह बहुत दिलगिरफ़्ता[१] और अलील[२] हैं। जब से डाक्टर का इंतक़ाल हुआ उनकी तबीयत परेशान है। वह उदास रहते हैं। शाज़[३] ही किसी से बोलते हैं। कुछ ख़बर नहीं कि क्या सानिहा[४] हो गया है। आज वह सैर करने पर मुसिर[५] हुए। वह कहते थे कि मैं सरमा[६] शुरू होने के पहले आख़िरी बार धूप में जज़ीरे[७] को देखना चाहता हूँ। ऐसा मालूम होता कि सरमा बहुत सर्द और तूलानी होगा। अभी से शुमाल[८] की जानिब से बर्फ़

१ उद्विग्न २ अस्वस्थ ३ बिरले ४ दुर्घटना ५ आग्रहशील ६ जाड़ा ७ टापू ८ उत्तर

आने लगी है। वह कुछ मुतरद्दिद[1] भी थे। लोग कहते हैं कि पिछले दिनों के तूफ़ानों से नदियों में सैलाब[2] आ गया है और पुश्ते[3] मुनहादिम[4] होते जाते हैं। वह यह भी कहते थे कि मुझे समुंदर से खौफ़ मालूम होता है। वह बिला वजह मुतलातिम[5] हो रहा है और जज़ीरे की पहाड़ियाँ काफ़ी तौर पर ऊँची नहीं हैं। वह खुद अपनी आँखों से देखना चाहते थे लेकिन उन्होंने हमसे कुछ नहीं बतलाया कि क्या देखा। मुझे खयाल आता है कि वह पगली औरत के लिए रोटी और पानी लाने गये हैं। वह कहते थे कि शायद मुझे दूर जाना पड़े। हमको मजबूरन इंतज़ार करना पड़ेगा।

**नौजवान अंधी औरत**

जाते वक़्त उन्होंने मेरे हाथ पकड़े थे। उनके हाथ काँप रहे थे। गोया वह डर रहे हों। तब उन्होंने मेरा बोसा लिया।

**पहला नाबीना**

अच्छा !

**नौजवान अंधी औरत**

मैंने उनसे पूछा कि क्या बात हो गयी है। उन्होंने कहा, मुझे नहीं मालूम कि क्या होनेवाला है। वह कहते थे कि बुड्ढों की हुकूमत अब ख़त्म होनेवाली है। ग़ालिबन...

**पहला नाबीना**

इससे उनकी क्या मंशा थी ?

---

१ परीशान २ बाढ़ ३ कगार ४ टूटते ५ उद्विग्न

**नौजवान अंधी औरत**

मैंने भी उनका मतलब न समझा। उन्होंने मुझसे यही बताया कि मैं उस बड़े रौशनी के मीनार की तरफ़ जा रहा हूँ।

**पहला नाबीना**

क्या यहाँ कोई रौशनी का मीनार भी है ?

**नौजवान अंधी औरत**

हाँ, जज़ीरे के शुमाल में है। मेरा ख़याल है कि हम उससे बहुत दूर नहीं हैं। वह मुझसे कहते थे कि मुझे मीनार की रौशनी यहाँ की पत्तियों पर पड़ती हुई नज़र आती है। मुझे आज के से अफ़सुर्दा-ख़ातिर[1] वह कभी न मालूम हुए थे और मेरा ख़याल है कि वह कई दिन से रोया करते थे। मालूम नहीं क्यों ! मैं ख़ुद भी रोयी। मैंने उन्हें जाते हुए नहीं सुना। इससे ज़्यादा मैं उनसे और कुछ न पूछ सकी। मैं सुन रही थी कि वह बहुत संजीदगी से मुस्करा रहे थे। मैंने यह भी सुना कि वह आँखें बंद कर रहे थे और सुकून चाहते थे।

**पहला नाबीना**

उन्होंने यह सब बातें हमसे नहीं कहीं।

**नौजवान अंधी औरत**

तुम उनकी बातें कब सुनते थे।

**सबसे बुड्ढा अंधी औरत**

जब वह बोलते हैं तो तुम सब के सब कानाफुसकी करने

१ उदास

लगती हो ।

**दूसरा नाबीना**

चलते वक़्त उन्होंने सिर्फ़ "वस्सलाम" कहा ।

**तीसरा नाबीना**

रात ज़्यादा आ गयी ।

**पहला नाबीना**

चलते वक़्त उन्होंने दो-तीन बार "वस्सलाम" कहा, गोया सोने जा रहे हों । जब वह सलाम कर रहे थे तो मुझे ऐसा मालूम होता था कि वह मेरी तरफ़ ताक रहे हैं । जब कोई किसी चीज़ की तरफ़ ग़ौर से देखता है तो उसकी आवाज़ तबदील हो जाती है ।

**पाँचवा नाबीना**

उन लोगों पर रहम करो जिनके आँखें नहीं हैं ।

**पहला नाबीना**

यह कौन वाहियात बातें कर रहा है !

**दूसरा नाबीना**

शायद यह वो है जो सुन नहीं सकता ।

**पहला नाबीना**

चुप रहो, यह रोने का वक़्त नहीं है ।

**तीसरा नाबीना**

महात्मा जी रोटी और पानी लेने कहाँ चले गये ?

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

वह समुदर की तरफ़ गये।

**तीसरा नाबीना**

इस सिन-ओ-साल[1] पर कोई इस तरह समुंदर की तरफ़ नहीं जाता।

**दूसरा नाबीना**

क्या हम समुंदर के क़रीब हैं ?

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

हाँ, एक लमहा खामोश हो जाओ, तुम्हें उसकी आवाज़ सुनायी देगी।

( क़रीब से समुंदर की धीमी-धीमी सदा )

**दूसरा नाबीना**

मुझे तो सिर्फ़ तीनों औरतों के दुआ करने की आवाज़ आ रही है।

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

ग़ौर से सुनो। उनकी दुआओं के बीच-बीच में तुम्हें उसकी आवाज़ सुनायी देगी।

**दूसरा नाबीना**

हाँ, मुझे कोई ऐसी आवाज़ सुनायी देती है जो हमसे दूर नहीं है।

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

वह सोयी हुई थी, ऐसा मालूम होता है कि अब जाग रही है।

---

१ उम्र

**पहला नाबीना**

महात्मा जी को हमें यहाँ न लाना चाहिए था। मुझे इस शोर से अंदेशा होता है।

**सबसे बुड्ढा आदमी**

तुम खूब जानते हो कि जज़ीरा बहुत बड़ा नहीं है और ज्योंही खानक़ाह से बाहर निकलो, यह सदा[१] आने लगती है।

**दूसरा नाबीना**

मैंने कभी इसकी तरफ़ ध्यान नहीं दिया।

**तीसरा नाबीना**

मुझे ऐसा मालूम होता है कि आज यह बहुत क़रीब हो गयी है। मैं इसे इतने पास से नहीं सुनना चाहता।

**दूसरा नाबीना**

मुझे भी यह पसंद नहीं। फिर हमने खानक़ाह से बाहर आने के लिए कभी नहीं कहा।

**तीसरा नाबीना**

हम इतनी दूर कभी यहाँ नहीं आये। हमें इतनी दूर लाने से क्या फ़ायदा?

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

आज सुबह मौसम बहुत सुहाना था। वह चाहते थे कि हम गर्मी के आखिरी दिनों का लुत्फ़ उठायें, क़ब्ल इसके कि जाड़े भर के लिए खानक़ाह में मुक़ैयद[२] हो जायँ।

---

१ आवाज़ २ क़ैद

**पहला नाबीना**

लेकिन मुझे ख़ानक़ाह में पड़े रहना ज्यादा पसंद है ।

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

वह कहते थे कि हम जिस जज़ीरे में रहते हैं उसका कुछ हाल ज़रूर जानना चाहिए। उन्होंने खुद भी पूरा जज़ीरा नहीं देखा है। यहाँ एक ऐसा पहाड़ है जिस पर कोई नहीं चढ़ सका, ऐसी वादियाँ हैं जहाँ कोई नहीं जाना पसंद करता, और ऐसे ग़ार हैं जिनमें आज तक कोई दाख़िल नहीं हो सका। अलग़रज़ उनका मंशा था कि हम लोगों को आफ़ताब[1] के इंतज़ार में हमेशा ख़ानक़ाह के ज़ेरे-साया[2] बैठे रहना मुनासिब नहीं। इसलिए वह हमको साहिल तक लाना चाहते थे। वह वहाँ तनहा गये हैं।

**सबसे बुड्ढा अंधा आदमी**

उनका कहना सही है। हमको ज़िंदगी का ख़याल रखना चाहिए।

**पहला नाबीना**

लेकिन यहाँ मैदान में देखने के क़ाबिल कोई चीज़ नहीं है।

**दूसरा नाबीना**

क्या हम इस वक़्त धूप में हैं ?

**तीसरा नाबीना**

क्या आफ़ताब अभी तक निकला हुआ है ?

**छठवाँ नाबीना**

मेरा ख़याल है कि अब नहीं है। मालूम होता है कि रात ज़्यादा गयी।

---

१ सूरज २ छाया में

**दूसरा नाबीना**

क्या बजे हैं ?

**और सबके सब**

कोई नहीं जानता ।

**दूसरा अंधा**

क्या अभी तक रोशनी है ? (छठवें नाबीना से) तुम कहाँ हो ? हमें तो कुछ-कुछ सुझायी देता है । यहाँ आओ ।

**छठवाँ नाबीना**

मेरे ख़याल में इस वक्त़ ख़ूब अँधेरा है । जब धूप होती है तो मुझे पलकों के नीचे एक नीली लकीर-सी नज़र आती है । बहुत अर्सा गुज़रा मैंने ऐसी लकीर देखी थी लेकिन अब मुझे मुतलक़ दिखायी नहीं देता ।

**पहला नाबीना**

और मुझे तो देर होने की ख़बर उस वक्त़ होती है, जब मुझे भूख लगती है, और इस वक्त़ मैं भूखा हूँ ।

**तीसरा नाबीना**

लेकिन आसमान की तरफ तो देखो, शायद कुछ नज़र आये ।

( सबके सब आसमान की तरफ़ सर उठाते हैं, उन तीनों को छोड़कर जो मादरज़ाद[१] अंधे थे, जो ज़मीन की तरफ़ ताकते रहते हैं । )

१ जनम से

**छठवाँ नाबीना**

मुझे नहीं मालूम होता कि हम लोग बिलकुल आसमान के नीचे हैं।

**पहला नाबीना**

हमारी आवाज़ें इस तरह गूँज रही हैं गोया वह किसी ग़ार[१] में हों।

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

मेरा तो ख़याल है कि उनके गूँजने का सबब शाम का वक़्त है।

**नौजवान अंधी औरत**

मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि मेरे हाथों पर चाँदनी फैली हुई है।

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

मेरा ख़याल है कि सितारे निकले हैं। मैं उन्हें सुन रही हूँ।

**नौजवान अंधी औरत**

मैं भी सुन रही हूँ।

**पहला नाबीना**

मुझे तो कोई आवाज़ नहीं सुनायी देती।

**दूसरा नाबीना**

मुझे तो अपने साँस लेने की आवाज़ सुनायी दे रही है।

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

मेरा ख़याल है कि औरतें सही कहती हैं।

**पहला नाबीना**

मैंने कभी सितारों की आवाज़ नहीं सुनी।

---

२ गहरे खड्ड

**दूसरे और तीसरे अंधे आदमी**

हमने भी नहीं सुनो।

(तायराने-शब[1] का एक ग़ोल दफ़अतन्[2] पत्तियों पर उतरता है।)

**दूसरा नाबीना**

सुनो सुनो ! यह ऊपर क्या है ? सुन रहे हो ?

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

हमारे और आसमान के बीच से कोई चीज़ गुज़र गयी।

**छठवाँ नाबीना**

हमारे बालाए-सर[3] कोई चीज़ हरकत कर रही है लेकिन हम उसे पा नहीं सकते।

**पहला नाबीना**

इस आवाज़ की हक़ीक़त मेरी समझ में नहीं आती। मैं ख़ानक़ाह की तरफ़ लौटना चाहता हूँ।

**दूसरा नाबीना**

हम यह जानना चाहते हैं कि हम कहाँ हैं ?

**छठवाँ नाबीना**

मैंने खड़े होने की कोशिश की। हमारे चारों तरफ काँटे ही काँटे हैं, और कुछ नहीं। अब मैं अपने हाथ भी फैलाने की जुरअत नहीं कर सकता।

**तीसरा नाबीना**

मालूम नहीं हम कहाँ हैं ?

---

१ रात की चिड़ियाँ २ अचानक ३ सर के ऊपर

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

हम इसे नहीं जान सकते ।

**छठवाँ नाबीना**

हम ख़ानक़ाह से बहुत दूर हैं । मुझे वहाँ की कोई आवाज़ नहीं सुनायी देती ।

**तीसरा नाबीना**

बहुत अर्से से मुझे सूखी पत्तियों की बू आ रही है ।

**छठवाँ नाबीना**

हममें से किसी ने इस जज़ीरे को ज़मानए-गुज़िश्ता[1] में देखा है और वह बतला सकता है कि हम कहाँ है ?

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

जब यहाँ आये तो हम सब के सब अंधे थे ।

**पहला नाबीना**

हमें कभी कुछ दिखायी ही नहीं दिया ।

**दूसरा नाबीना**

हमें ख़ामख़ाह परेशान होने की क्या ज़रूरत है । वह जल्द वापस आयेंगे । ज़रा देर और उनका इंतज़ार करो, लेकिन आइंदा से हम फिर उनके साथ न आयेंगे ।

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

हम अकेले घूमने नहीं निकल सकते ।

[1] गुज़रे ज़माने

**पहला नाबीना**

हम निकलेंगे ही न। मुझे घूमना पसंद नहीं।

**दूसरा नाबीना**

हमारी बाहर आने की ख्वाहिश नहीं थी, किसी ने उनसे यह दरख़्वास्त नहीं की।

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

जज़ीरे में यह तातील का दिन है। तातीलों में हम सब सैर करने निकलते हैं।

**तीसरी अंधी औरत**

मैं सो ही रही थी कि उन्होंने आकर मेरे कंधे को हिलाया और कहा, उठो-उठो, वक़्त आ गया, धूप निकली हुई है। क्या धूप निकली हुई थी ? मुझे इसकी खबर नहीं। मैंने कभी धूप नहीं देखी।

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

मैं बहुत छोटा था तब मैंने धूप देखी थी।

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

मैंने भी, बहुत दिन हुए जब मैं बहुत छोटी थी लेकिन अब बिल्कुल याद नहीं।

**तीसरा नाबीना**

हर बार जब धूप निकलती है तो वह क्यों हमें बाहर लाते हैं ? क्या हम इससे कुछ ज़्यादा अक़्लमंद हो जाते हैं ? मुझे तो बिल-कुल मालूम नहीं होता कि रात है या दिन ?

छठवाँ नाबीना

मुझे दोपहर के वक़्त घूमना अच्छा मालूम होता है। मुझे उस वक़्त बहुत चमक महसूस होती है और मेरी आँखें खुलने की कोशिश करती हैं।

तीसरा नाबीना

मुझे तो अपनी ख़्वाबगाह[१] में कोयले के सामने बैठना ज़्यादा पसंद है। आज सुबह ख़ूब आग रौशन थी।

दूसरा नाबीना

वह हमें धूप खिलाने के लिए सहन में ला सकते थे। वहाँ दीवारों की हिफ़ाज़त में तो रहते। जब दरवाज़ा बंद रहता है तो कोई ख़ौफ़ नहीं मालूम होता। मैं हमेशा दरवाज़ा बंद कर दिया करता हूँ। तुमने मेरी कुहनी क्यों छुई ?

पहला नाबीना

मैंने नहीं छुई। मैं तुमसे बहुत दूर हूँ।

दूसरा नाबीना

मैं सच कहता हूँ कि किसी ने मेरी कुहनी छुई है।

पहला नाबीना

हममें से किसी ने नहीं छुई।

दूसरा नाबीना

मैं यहाँ से जाना चाहता हूँ।

---

१ शयनगृह

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

या खुदा ! खुदा ! हम कहाँ हैं ?

**पहला नाबीना**

हम यहाँ हमेशा नहीं बैठे रह सकते।

(किसी दूर की घड़ी में आहिस्ता-आहिस्ता बारह बजते हैं।)

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

उफ़ ! हम लोग ख़ानक़ाह से कितनी दूर निकल आये हैं।

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

आधी रात हो गयी ।

**दूसरा नाबीना**

दोपहर है। कोई जानता है? बोलो।

**छठवाँ नाबीना**

मुझे मालूम नहीं लेकिन मैं खयाल करता हूँ कि हम लोग साये में हैं।

**पहला नाबीना**

मुझे कुछ नहीं मालूम होता। मैं बहुत देर तक सो गया।

**दूसरा नाबीना**

मुझे भूख लगी हुई है।

**और सब के सब**

हम भी भूखे और प्यासे हैं।

**दूसरा नाबीना**

क्या हमें यहाँ आये हुए देर हुई ?

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि मैं यहाँ सदियों से हूँ।

**छठवाँ नाबीना**

मुझे कुछ-कुछ मालूम हो रहा कि हम कहाँ हैं।

**तीसरा नाबीना**

हमें उस तरफ़ जाना चाहिए जिधर से बारह बजने की आवाज़ आयी है।

(तायराने शब यकायक तारीकी[1] में शोर करने लगते हैं।)

**पहला नाबीना**

तुम लोग सुनते हो ? सुनते हो ?

**दूसरा नाबीना**

यहाँ हमारे सिवाय कोई और भी है ?

**तीसरा नाबीना**

मुझे बहुत देर से इसका शुबहा है। कोई हमारी बातें सुन रहा है। क्या वह लौट आये ?

**पहला नाबीना**

मालूम नहीं क्या है। यह हमारे ऊपर है।

**दूसरा नाबीना**

क्या दूसरों ने कुछ नहीं सुना ? तुम लोग हमेशा ख़ामोश रहते हो।

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

हम तो अभी तक सुन रहे हैं।

१ अँधेरे

**नौजवान अंधी औरत**

मुझे अपने इर्द-गिर्द हर दिन की आवाज़ आ रही है।

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

ऐ खुदा ! ऐ खुदा ! हम कहाँ हैं ?

**छठवाँ नाबीना**

मुझे कुछ-कुछ मालूम हो रहा है कि हम कहाँ हैं। खानक़ाह इस बड़ी नदी के उस पार है। हम पुराने पुल से होकर आये हैं। महात्मा जी हमको जज़ीरे के शुमाल में लाये हैं। हम नदी से दूर नहीं हैं। अगर हम एक लमहा ग़ौर से सुनें तो उसकी आवाज़ भी शायद सुनायी दे। अगर महात्मा जी न लौटेंगे तो हमको पानी के किनारे तक जाना पड़ेगा। वहाँ शबोरोज़[१] बड़े-बड़े जहाज आते-जाते रहते हैं। जहाज़ों के मल्लाह हमें किनारे पर खड़े देख लेंगे। यह भी मुमकिन है कि हम उस जंगल में हों जो रौशनी के मीनार को घेरे हुए है। लेकिन मुझे बाहर निकलने का रास्ता नहीं मालूम है। कोई मेरे साथ चलने पर तैयार है ?

**पहला नाबीना**

चुपचाप बैठे रहो। उनका इंतज़ार किये जाओ। हमें बड़ी नदी का रास्ता नहीं मालूम है, और खानक़ाह के चारों तरफ़ दलदल हैं। बस उनका इंतज़ार करना चाहिए। वह आयेंगे, ज़रूर आयेंगे।

---

[१] दिन-रात

**छठवाँ नाबीना**

कोई जानता है कि हम किस रास्ते से आये हैं ? जब हम आ रहे थे तो उन्होंने हमें समझाया था।

**पहला नाबीना**

मैंने बिलकुल ध्यान नहीं दिया।

**छठवाँ नाबीना**

क्या और किसी ने ध्यान से सुना था ?

**तीसरा नाबीना**

आइंदा हमको उनकी बातों को ग़ौर से सुनना चाहिए।

**छठवाँ नाबीना**

क्या हममें से किसी की पैदाइश इस जज़ीरे में हुई है ?

**सबसे बुड्ढा आदमी**

तुम्हें खूब मालूम है कि हम सब यहाँ दूसरी जगह से आये हैं।

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

हम समुंदर के उस पार से आये हैं।

**पहला नाबीना**

मुझे अंदेशा होता था कि समुंदर तै करते-करते मर न जाऊँ।

**दूसरा नाबीना**

मुझे भी। हम साथ-साथ आये थे।

**तीसरा नाबीना**

हम तीनों एक ही महाल से आये।

पहला नाबीना

लोग कहते हैं कि हमारा गाँव शुमाल की तरफ़ यहाँ से नज़र आता है, बशर्ते कि आसमान साफ़ हो । उसमें कोई मीनार नहीं है ।

तीसरा नाबीना

हम इत्तफ़ाक़ से यहाँ उतर पड़े ।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

मैं दूसरी तरफ़ से आयी हूँ ।

दूसरा नाबीना

तुम कहाँ से आयी हो ?

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

मुझे अब इसका खयाल करते हुए खौफ़ मालूम होता है । मुझे अब उसकी याद नहीं रही । बहुत दिन गुज़र गये । वहाँ यहाँ से ज़्यादा सर्दी पड़ती थी ।

नौजवान अंधी औरत

मैं भी बहुत दूर से आयी हूँ ।

पहला नाबीना

आखिर तुम कहाँ से आयी हो ?

नौजवान अंधी औरत

यह बतलाना बहुत मुश्किल है । मैं उसे क्योंकर बयान कर सकती हूँ । वह यहाँ से निहायत दूर है, समुंदरों के उस पार । वह बहुत बड़ा मुल्क है । मैं सिर्फ इशारों से उसका हाल बता

सकती हूँ लेकिन आँखें तो हैं ही नहीं। मैं बहुत दिनों तक भटकती फिरी हूँ लेकिन मैंने सूरज और आग और पानी और पहाड़ और लोगों के चेहरे और अजीब क़िस्म के फूल, सब देखे हैं। वैसे फूल इस जज़ीरे में नहीं हैं। यह तो बिलकुल वीरान, सुनसान और ठंडा है। जब से मेरी निगाह जाती रही है, मुझे फिर बू का एहसास नहीं हुआ। लेकिन मैंने अपने वाल्दैन[1] और बहनों को देखा है। मैं उस वक़्त बहुत छोटी थी और बिलकुल न जानती थी कि कहाँ हूँ। मैं उस वक़्त तक समुंदर के किनारे खेला करती थी...ताहम आँखों से देखने की याद अब भी खूब है... एक दिन मैंने पहाड़ की चोटी पर से बर्फ़ की तरफ़ देखा...उन्हीं दिनों मुझे उन लोगों की पहचान होने लगी थी जो ग़मनसीब होनेवाले हैं।

**पहला नाबीना**

तुम्हारा मतलब क्या है ?

**नौजवान अंधी औरत**

मैं अब भी कभी-कभी ऐसे आदमियों को उनकी आवाज़ से पहचान सकती हूँ...मेरे दिल में ऐसी यादें हैं जो ज़्यादा रौशन हो जाती हैं अगर मुझे उनका ध्यान न हो।

**पहला नाबीना**

मुझे कुछ याद नहीं...मैं...

---

१ माँ-बाप

( बड़ी-बड़ी चिड़ियों का एक ग़ोल शोर मचाता हुआ पत्तियों के ऊपर से गुज़रता है । )

सबसे बुड्ढा नाबीना

फिर आसमान के नीचे कोई चीज़ गुज़र रही है ।

दूसरा नाबीना

तुम यहाँ क्यों आयीं ?

सबसे बुड्ढा नाबीना

किस से पूछ रहे हो ?

दूसरा नाबीना

अपनी नौजवान साथिन से ।

नौजवान अंधी औरत

लोगों ने मुझसे कहा कि महात्मा जी मुझे अच्छा कर सकते हैं । वह कहते हैं कि एक दिन मेरी आँखें ज़रूर खुलेंगी । तब मैं इस जज़ीरे से चली जाऊँगी ।

पहला नाबीना

इस जज़ीरे को तो सब तर्क[1] करना चाहते हैं ।

दूसरा नाबीना

क्या हम यहाँ हमेशा पड़े रहेंगे ?

तीसरा नाबीना

महात्मा जी बहुत बुड्ढे हो गये हैं । उन्हें हम लोगों को अच्छा करने के लिए अब वक़्त नहीं है ।

---

१ छोड़ना

नौजवान अंधी औरत

मेरी पलकें बंद हैं लेकिन मुझे मालूम होता कि मेरी आँखों में बीनाई है।

पहला नाबीना

मेरी आँखें तो खुली हुई हैं...

दूसरा नाबीना

मैं सोता हूँ तब भी आँखें खुली रहती हैं।

तीसरा नाबीना

आँखों का ज़िक्र छोड़ो।

सबसे बुड्ढा नाबीना

एक रोज़ शाम को दुआ करते वक़्त मुझे औरतों की तरफ़ से एक ऐसी आवाज़ सुनायी दी कि जिसे मैं पहचान न सका। तुम्हारी आवाज़ से मालूम हो जाता है कि तुम नौजवान हो...मैं तुम्हारी आवाज़ सुनकर मैं तुम्हें देखना चाहता था...

पहला नाबीना

मुझे कभी इसका इल्म नहीं हुआ।

दूसरा नाबीना

वह हमें कुछ बतलाते ही नहीं।

छठवाँ नाबीना

लोग कहते हैं कि तुम खूबसूरत हो, जैसे कोई औरत जो बहुत दूर से आयी हो।

**नौजवान अंधी औरत**

मैंने अपने तईं खुद कभी नहीं देखा।

**सबसे बुड्ढा अंधा आदमी**

हमने कभी एक दूसरे को नहीं देखा। हम तो आपस में सवाल करते हैं, जवाब देते हैं, साथ रहते हैं, साथ चलते फिरते हैं, लेकिन बिलकुल नहीं जानते कि हम क्या हैं। एक दूसरे को दोनों हाथों से छू लेने से क्या होता है। आँखें हाथों से ज़्यादा बाख़बर होती हैं...

**छठवाँ नाबीना**

जब तुम लोग धूप में निकलते हो तो कभी-कभी मुझे तुम्हारा साया दिखायी देता है।

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

हमने उस घर को नहीं देखा जिसमें रहते हैं। दीवारों और खिड़कियों को हाथ से छूने से क्या होता है। हम बिलकुल नहीं जानते कि हम कहाँ रहते हैं।...

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

लोग कहते हैं कि यह एक बिलकुल तारीक, शिकस्ता, पुराना क़िला है। इस बुर्ज के सिवा जिसमें साधू जी रहते हैं वहाँ कभी रोशनी नज़र नहीं आती।

**पहला नाबीना**

जिनके आँखें नहीं हैं उन्हें रौशनी की क्या ज़रूरत है?

**छठवाँ नाबीना**

जब मैं खानक़ाह के आसपास भेड़ें चराता हूँ तो शाम के वक़्त वह बुर्ज की रौशनी देखकर आप ही आप घर पहुँच जाती हैं। उन्होंने मुझे कभी नहीं भटकाया।

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

हमें साथ रहते मुद्दतें गुज़र गईं, लेकिन हमने एक दूसरे को कभी नहीं देखा, गोया हम हमेशा तनहा रहते हैं। बिला देखे मुहब्बत नहीं पैदा होती....

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

मुझे कभी-कभी ख़्वाब में मालूम होता है कि मैं देख सकती हूँ।

**सबसे बुड्ढा अंधा**

मुझे सिर्फ़ सपने ही में दिखायी देता है।

**पहला नाबीना**

मैं अक्सर आधी रात को ख़्वाब देखता हूँ।

**दूसरा नाबीना**

जब हाथों में हरकत ही नहीं होती तो इंसान किस चीज़ का ख़्वाब देख सकता है?

(एक तूफ़ान जंगल को हिला देता है और पत्तियाँ झड़ने लगती हैं।)

**पाँचवाँ नाबीना**

किसने मेरे हाथ छुए?

**पहला नाबीना**

हमारे चारों तरफ़ कोई चीज़ गिर रही है ।

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

ऊपर से आ रही है । मालूम नहीं क्या है...

**पाँचवाँ नाबीना**

किसने मेरे हाथ छुए। मैं सो रहा था । मुझे खूब सोने दो ।

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

किसी ने तुम्हारे हाथ नहीं छुए ।

**पाँचवाँ नाबीना**

किसने मेरे हाथ पकड़े थे ? ज़ोर से बोलो । मैं ज़रा ऊँचा सुनता हूँ।

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

हमको खुद नहीं मालूम ।

**पाँचवाँ नाबीना**

क्या कोई हमें ख़बरदार करने आया है ?

**पहला नाबीना**

इसको जवाब देना फ़िज़ूल है । उसे कुछ सुनायी नहीं देता ।

**तीसरा नाबीना**

यह मानना पड़ेगा कि बहरे बड़े बदनसीब होते हैं ।

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

मैं बैठे बैठे थक गया ।

**छठवाँ नाबीना**

मैं यहाँ रहते रहते थक गया ।

दूसरा नाबीना

मुझे ऐसा मालूम होता है कि हम लोग बहुत दूर बैठे हुए हैं। आओ ज़रा और क़रीब आ जायें...ठंड पड़ने लगी।

तीसरा नाबीना

मुझे खड़े होते डर मालूम होता है। जहाँ बैठे हो वहीं बैठे रहो।

सबसे बुड्ढा नाबीना

मालूम नहीं हम लोगों के बीच में क्या हो।

छठवाँ नाबीना

मेरे दोनों हाथों से खून निकलता हुआ मालूम होता है। मैं खड़ा होना चाहता था।

तीसरा नाबीना

आवाज़ से ऐसा मालूम होता है कि तुम मेरी तरफ़ झुके हुए हो।

(अंधी पगली औरत ज़ोर से अपनी आँखें मलती है और कराहते हुए बार-बार बेजान साधू की तरफ़ सर फेरती है।)

पाँचवाँ नाबीना

मुझे अब दूसरा शोर सुनायी देता है।

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

मेरे ख़याल में हमारी पगली बहन आँखें मल रही है।

दूसरा नाबीना

बस, वह भी क्या करती है, मैं रोज़ रात को सुना करता हूँ।

तीसरा नाबीना

वह पगली से कुछ नहीं बोलती।

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

जब से बच्चा पैदा हुआ वह एक बार भी नहीं बोली। मालूम होता है वह डरती है...

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

तो क्या तुम लोगों को यहाँ डर नहीं लगता ?

**पहला नाबीना**

किसको ?

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

बाक़ी बाहम सब लोगों को ।

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

हाँ, हम सब यहाँ डरते हैं ।

**नौजवान अंधी औरत**

हम बहुत दिनों से डर रहे हैं ।

**पहला नाबीना**

तुम यह क्यों पूछते हो ?

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

मैं खुद नहीं जानता कि क्यों पूछता हूँ...कोई बात ऐसी है जो मेरे ज़ेहन में नहीं आती...ऐसा मालूम होता है कि मेरे कानों में यकायक किसी के रोने की आवाज़ आयी...

**पहला नाबीना**

डरने से क्या होता है। शायद पगली औरत रोती है ।

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

नहीं, इसके अलावा कुछ और है...यक़ीनन कुछ और है...सिर्फ़ उसके रोने से मुझे ख़ौफ़ नहीं मालूम होता ।

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

वह जब अपने बच्चे को दूध पिलाने लगती है तो हमेशा रोती है ।

**पहला नाबीना**

सिर्फ़ वही इस तरह रोती है ।

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

लोग कहते हैं कि अब भी कभी-कभी उसे दिखायी देता है...

**पहला नाबीना**

हम किसी का रोना नहीं सुनते ।

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

रोने के लिए देखना ज़रूरी है ।

**नौजवान अंधी औरत**

मुझे यहाँ कहीं से फूलों की महक आयी है ।

**पहला नाबीना**

मुझे तो सिर्फ़ मिट्टी की बू आती है ।

**नौजवान अंधी औरत**

हमारे क़रीब फूल हैं, फूल हैं ।

**दूसरा नाबीना**

मुझे तो सिर्फ़ मिट्टी की बू आती है ।

**नौजवान अंधी औरत**

मुझे अभी हवा में फूलों की खुशबू आयी।

**तीसरा नाबीना**

मुझे तो सिर्फ़ मिट्टी की बू आ रही है।

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

मेरा खयाल है कि औरतें सही कहती हैं।

**छठवाँ नाबीना**

फूल कहाँ हैं ? मैं जाकर चुनूँगा।

**नौजवान अंधी औरत**

खड़े हो जाओ, तुम्हारे दायीं तरफ़ हैं।

(छठवाँ अंधा आहिस्ता आहिस्ता खड़ा होता है और दरख्तों और झाड़ियों में उलझता हुआ नर्गिसों की तरफ़ जाता है जिन्हें वह पैरों से कुचल डालता है।)

**नौजवान अंधी औरत**

मुझे सुनायी देता है कि तुम हरी डालियों को तोड़े डालते हो। ठहरो, ठहरो।

**पहला नाबीना**

फूलों की फ़िक्र मत करो, सोचो कि क्योंकर लौटोगे।

**छठवाँ नाबीना**

अब मैं अपने क़दमों को फेरने की जुरअत नहीं कर सकता।

**नौजवान अंधी औरत**

हरगिज़ मत आना। ठहरो (वह उठती है) आह ! ज़मीन कितनी

सर्द है ! शायद बर्फ़ गिरेगी। (वह बेधड़क ज़र्द नर्गिसों की तरफ़ जाती है लेकिन गिरे हुए दरख़्त और चट्टान रास्ते में हायल हो जाते हैं) वह यहाँ हैं, लेकिन मैं उन्हें नहीं पा सकती । वह तुम्हारी तरफ़ हैं ।

**छठवाँ नाबीना**

मैं समझता हूँ कि फूलों को चुन रहा हूँ ।

(इधर-उधर टटोलकर वह बचे हुए फूलों को तोड़ लेता है और नौजवान अंधी औरत को दे देता है । तायराने शब उड़ जाते हैं ।)

**नौजवान अंधी औरत**

मुझे ऐसा मालूम होता है कि मैंने कभी इन फूलों को देखा है ....मैं इनका नाम भूल गयी हूँ....लेकिन यह कितने बदनुमा हैं और उनकी डंठल कितनी कमज़ोर ! मैं उन्हें बमुशकिल पहचान सकती हूँ ।...मेरा ख़याल है कि यह मजार के फूल हैं....(वह नर्गिसों को अपने बालों में गूँध लेती है ।)

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

मुझे तुम्हारे बालों की आवाज़ सुनायी देती है ।

**नौजवान अंधी औरत**

यह फूलों की आवाज़ है ।

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

हम तुम्हें न देखेंगे !

**नौजवान अंधी औरत**

मैं खुद अपने तईं न देखूँगी....मुझे सर्दी लग रही है !

(उसी वक़्त हवा जंगल में ज़ोर से चलने लगती है और समुंदर यकायक मुत्तसिल[1] पहाड़ों से टकराकर मुहीब[2] आवाज़ से गरजता है ।)

**पहला नाबीना**

बादल गरज रहा है !

**दूसरा नाबीना**

मेरा खयाल है कि तूफ़ान आ रहा है ।

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

शायद समुंदर की आवाज़ है ।

**तीसरा नाबीना**

क्या समुंदर ? यह समुंदर की आवाज़ है ? लेकिन यह तो हमसे दो ही क़दम के फ़ासले पर मालूम होती है ! बिलकुल हमारे पास ! चारों तरफ़ यही आवाज़ आ रही है ! यह कुछ और होगा !

**नौजवान अंधी औरत**

मैं लहरों की आवाज़ अपने पैरों के पास सुन रही हूँ ।

**पहला नाबीना**

मेरे खयाल में हवा सूखी पत्तियों को खड़खड़ा रही है ।

---

१ पास के २ भयानक

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

मैं समझता हूँ कि औरतें सही कहती हैं।

**तीसरा नाबीना**

तब तो वह यहाँ आता होगा।

**पहला नाबीना**

हवा कहाँ से आती है?

**दूसरा नाबीना**

समुंदर से।

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

हवा हमेशा समुंदर की तरफ़ से आती है। समुंदर हमें चारों तरफ़ से घेरे हुए है। वह किसी दूसरी तरफ़ से नहीं आ सकती।

**पहला नाबीना**

भई, समुंदर का ख़याल मत करो।

**दूसरा नाबीना**

यह क्योंकर मुमकिन है। वह तो ज़रा देर में हमारे पास आ जायेगा!

**पहला नाबीना**

तुम्हें क्या मालूम कि यह समुंदर की ही आवाज़ है।

**दूसरा नाबीना**

मुझे उसकी लहरें ऐसी क़रीब मालूम होती हैं कि मैं उसमें अपने हाथ डुबा सकता हूँ। हम यहाँ नहीं ठहर सकते। कहीं वह हमें चारों तरफ़ से घेर न ले।

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

तुम कहाँ जाना चाहते हो ?

**दूसरा नाबीना**

इसकी कुछ परवाह नहीं, इसकी कुछ परवाह नहीं । अब पानी की यह गरज नहीं सुन सकता । यहाँ से भाग चलो, चलो !

**तीसरा नाबीना**

मुझे ऐसा मालूम होता है कि कोई और आवाज़ भी है । कान लगाओ । ( तेज़ और दूर के क़दमों की आवाज़ सूखो पत्तियों में सुनायी देती है । )

**पहला नाबीना**

कोई चीज़ हमारो तरफ़ आ रही है !

**दूसरा नाबीना**

साधू जी हैं । साधू जी हैं ! वह वापस आ रहे हैं ।

**तीसरा नाबीना**

वह छोटे-छोटे क़दम रख रहे हैं, बिलकुल एक छोटे बच्चे की तरह...

**दूसरा नाबीना**

आज उन्हें कुछ बुरा-भला मत कहना !

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

मेरे ख़याल में यह आदमी के क़दम नहीं हैं ।

( एक बड़ा कुत्ता जंगल में आता है और उनके सामने से गुज़रता है । सन्नाटा है ।

**पहला नाबीना**

यह कौन है ? अरे तुम कौन हो ? हमारे ऊपर रहम करो, हम बहुत देर से बैठे हुए हैं...( कुत्ता रुक जाता है और लौटकर अपने अगले पंजे को पहले नाबीना की घुटनियों पर रख देता है । ) अरे ! आह ! तुमने मेरी घुटनियों पर क्या रख दिया ? यह क्या है ? अरे, यह तो कोई जानवर है ! कुत्ता मालूम होता है...हाँ हाँ कुत्ता ही है । यह हमारी खानक़ाह का कुत्ता है । इधर आओ, इधर आओ । हमें रास्ता दिखाने आया है । इधर आ, इधर आ !

**पहला नाबीना**

यह हमें रास्ता दिखाने आया है । हमारे पैरों के निशान देखता चला आया है । यह मेरे हाथ चाट रहा है, गोया मुझे सदियों के बाद देखा है । खुशी के मारे गुर्रा रहा है, खुशी के मारे मर न जाये ! सुनो, कान लगाओ !

**और सब के सब**

इधर आ ! इधर आ !

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

शायद वह किसी आदमी के आगे-आगे आया है....

**पहला नाबीना**

नहीं, नहीं बिलकुल अकेला आया है । मुझे और किसी के आने की आहट नहीं मिलती । अब हमें किसी दूसरे मालिक की जरूरत नहीं । इससे अच्छा और कौन होगा । हम जहाँ जायेंगे वहीं ले

जायगा, हमारा हुक्म मानेगा....

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

मैं इसके साथ नहीं जा सकती ।

**नौजवान अंधी औरत**

मैं भी नहीं जा सकती ।

**पहला नाबीना**

क्यों ? हमारी निगाह से इसकी निगाह बेहतर है ।

**दूसरा नाबीना**

इन औरतों को बकने दो ।

**तीसरा नाबीना**

मेरा खयाल है कि आसमान में कुछ तग़ैयुर[1] हो गया है । हवा अब साफ़ है....मैं खूब साँस ले सकता हूँ ।

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

समुंदरी हवा हमारे चारों तरफ़ चल रही है ।

**छठवाँ नाबीना**

मुझे ऐसा मालूम होता है कि रौशनी आ रही है । शायद आफ़-ताब निकल रहा है ।

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

मेरा खयाल है कि सर्दी पड़नेवाली है ।

**पहला नाबीना**

अब हमें रास्ता मिल जायेगा । कुत्ता मुझे खींच रहा है । वह

---

१ परिवर्तन

खुशी से फूला नहीं समाता। मैं अब उसे रोक नहीं सकता। चलो, हमारे साथ चलो। हम लोग घर जा रहे हैं...(कुत्ता उसे खींचकर बेजान साधू के पास ले जाता है और वहाँ रुक जाता है।)

**और सबके सब**

तुम कहाँ हो ?...कहाँ जा रहे हो ?...होशियार रहना।

**पहला नाबीना**

ठहरो-ठहरो, अभी मेरे साथ मत आओ। मैं लौटा जाता हूँ....साधू जी खामोश खड़े हैं....अरे यह क्या है...मुझे कोई बहुत ठंडी चीज़ महसूस हुई...

**दूसरा नाबीना**

तुम क्या कह रहे हो ? मुझे अब तुम्हारी आवाज़ नहीं सुनायी देती

**पहला नाबीना**

मैंने....शायद मेरा हाथ किसी के चेहरे पर पड़ा है....

**तीसरा नाबीना**

तुम क्या कह रहे हो ! तुम्हारी बातें अब मुशकिल से समझ में आती हैं। तुम्हें क्या हो गया है ? तुम कहाँ हो ? क्या इतनी जल्द तुम हमसे इतनी दूर निकल गये ?

**पहला नाबीना**

अरे अरे....कुछ समझ में नहीं आता कि यह क्या है....हमारे पास एक मुर्दा आदमी पड़ा हुआ है।

**और सब के सब**

क्या मुर्दा आदमी ? तुम कहाँ हो ? तुम कहाँ हो ?

### पहला नाबीना

मैं तुमसे सच कहता हूँ। हमारे बीच में एक मुर्दा आदमी है.... अरे....मैंने एक मुर्दा चेहरा छू लिया....तुम सब एक मुर्दे के पास बैठे हो...हममें से कोई यकायक मर गया....लेकिन बोलो....सबके सब बोलो ताकि मालूम हो कि हममें कौन-कौन से आदमी ज़िन्दा हैं !

( पगली औरत और बहरे मर्द के सिवा और सब बारी-बारी से जवाब देते हैं । तीनों बुड्ढी औरतों ने दुआ करना बंद कर दिया है । )

### पहला नाबीना

मैं अब तुम्हारी आवाज़ों को नहीं पहचान सकता....तुम्हारी आवाज़ एक ही सी है....सबके सब काँप रहे हो ।

### तीसरा नाबीना

दो आदमियों ने जवाब नहीं दिया । वह कहाँ गये ?

( वह अपनी छड़ी से पाँचवें अंधे को छूता है । )

### पाँचवाँ नाबीना

अरे अरे ! मैं सो रहा था, मुझे सोने दो ।

### छठवाँ नाबीना

बहरा तो नहीं मरा । क्या पगली तो नहीं मर गयी ?

### सबसे बुड्ढी अंधी औरत

वह मेरे क़रीब बैठी हुई है । मैं उसका साँस लेना सुन रही हूँ ।

पहला नाबीना

मेरा ख़याल है....मेरा ख़याल है कि यह साधू जी हैं। वह खड़े हैं। आओ आओ।

दूसरा नाबीना

क्या वह खड़े हैं ?

तीसरा नाबीना

तब वह मरे नहीं हैं।

सबसे बुड्ढा नाबीना

कहाँ हैं ?

छठवाँ नाबीना

आकर देखो।

( पगली औरत और बहरे अंधे के सिवा सब उठते हैं और टटोलते हुए मुर्दे की तरफ जाते हैं। )

दूसरा नाबीना

क्या यही है ? यही ?

तीसरा नाबीना

हाँ हाँ, मैं उन्हें पहचानता हूँ।

पहला नाबीना

या खुदा, या खुदा, हमारा क्या हाल होगा !

सबसे बुड्ढी अंधी औरत

स्वामी जी ! क्या यह तुम्हीं हो ? तुम्हें क्या हो गया है ? हमारी बातों का कुछ जवाब दो। हम सब तुम्हारे पास

जमा हैं । हाय हाय !

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

थोड़ा-सा पानी लाओ । शायद अभी कुछ जान है ।

**छठवाँ नाबीना**

हाँ, उन्हें बचाना चाहिए....ग़ालिबन् वह हमें खानक़ाह तक पहुँचाने के क़ाबिल हो जायेंगे ।

**तीसरा नाबीना**

बिलकुल बेकार....मुझे उनके दिल की आवाज़ नहीं सुनायी देती ....बिलकुल ठंडे हो गये ।

**पहला नाबीना**

एक लफ़्ज भी न बोले....

**तीसरा नाबीना**

उन्हें लाज़िम था कि हमें जता देते ।

**दूसरा नाबीना**

हाय, वह कितने बुड्ढे हो गये थे । मैंने अबकी पहली बार उनका चेहरा छुआ है...

**तीसरा नाबीना**

( लाश को टटोलकर ) हम लोगों से लंबे हैं !

**दूसरा नाबीना**

इनकी आँखें खुली हुई हैं । हाथ बाँधे हुए मरे हैं ।

**पहला नाबीना**

उनके इस तरह मरने की कोई वजह नहीं थी...

**दूसरा नाबीना**

वह खड़े नहीं हैं। एक पत्थर पर बैठे हैं...

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

या खुदा !....मुझे यह सब न। मालूम था....न मालूम था....वह इतने दिनों से बीमार थे....आज उन्हें बहुत तकलीफ़ हुई होगी... हाय-हाय ! वह कभी शिकायत का एक हर्फ़ ज़बान पर नहीं लाये....सिर्फ़ हमारे हाथों को दबाकर अपना दर्देदिल ज़ाहिर किया....इंसान हमेशा इन बातों को नहीं समझता....कभी नहीं समझता....आओ मिलकर उनके लिए दुआए खैर[1] करें।

(औरतें घुटनों के बल बैठकर कराहती हैं।)

**पहला नाबीना**

मुझे झुकते हुए डर मालूम होता है ..

**दूसरा नाबीना**

क्या मालूम किस चीज़ पर घुटने पड़ें...

**तीसरा नाबीना**

क्या वही बीमार थे। हमसे कभी नहीं बतलाया !

**दूसरा नाबीना**

जाते वक़्त वह कुछ आहिस्ता-आहिस्ता कह रहे थे। शायद हमारी नौजवान बहन से कुछ कह रहे थे। क्या, उन्होंने क्या कहा ?

**पहला नाबीना**

वह जवाब न देंगी।

---

१ मंगलकामना की प्रार्थना

**दूसरा नाबीना**

क्या अब तुम हमारी बातों का जवाब न दोगी ? तुम कहाँ हो, बोलो !

**सबसे बुड्ढी औरत**

तुम लोगों ने उन्हें बहुत परीशान किया। तुम्हीं ने उन्हें मारा है। तुम आगे नहीं बढ़ते थे। तुम सड़क के किनारे पत्थरों पर बैठकर खाना चाहते थे। तुम सारे दिन भुनभुनाया करते थे। मैंने उन्हें आहें खींचते हुए सुना है ...आखिर वह मायूस हो गये...

**सबसे बुड्ढी**

हमें कुछ नहीं मालूम था। हमने उनकी सूरत कभी नहीं देखी... हम इन फूटी आँखों से क्या देख सकते हैं ! उन्होंने कभी किसी का गिला नहीं किया....अब मौक़ा निकल गया... मैंने तीन आदमियों को मरते देखा ....लेकिन इस तरह कोई नहीं मरा....अब हमारी बारी है....

**पहला नाबीना**

मैंने उन्हें हरगिज़ नहीं परीशान किया....मैंने कभी कुछ नहीं कहा।

**दूसरा नाबीना**

न मैंने ही। हम बेउज्र. उनका हुक्म मानते थे।

**तीसरा नाबीना**

वह पगली के वास्ते पानी लाने जा रहे थे, वहीं मर गये।

पहला नाबीना

अब हम क्या करें। कहाँ जायें !

तीसरा नाबीना

कुत्ता कहाँ गया ?

पहला नाबीना

यह बैठा है। वह लाश के पास से हटता ही नहीं।

तीसरा नाबीना

उसे हटा दो, भगा दो, भगा दो !

पहला नाबीना

वह इस लाश को नहीं छोड़ता।

दूसरा नाबीना

हम एक मुर्दा आदमी के पास नहीं बैठ सकते...हम इस तरह तारीकी में नहीं मरना चाहते !

तीसरा नाबीना

आओ हम लोग मिलकर बैठें, इधर-उधर न खिसकें, एक दूसरे के हाथ पकड़ लें। सब इसी पत्थर पर बैठें। और लोग कहाँ हैं ? यहाँ आ जाओ, सब यहाँ आ जाओ।

सबसे बुड्ढा नाबीना

तुम कहाँ हो ?

तीसरा नाबीना

मैं यहाँ हूँ ! हम सब एक साथ हैं न ? ज़रा और मेरे क़रीब आ जाओ। तुम लोगों के हाथ कहाँ हैं ? सख़्त सर्दी है।

**नौजवान अंधी औरत**

ओफ़ ! तुम लोगों के हाथ कितने सर्द हैं !

**तीसरा नाबीना**

तुम क्या कर रही हो ?

**नौजवान अंधी औरत**

मैं आँखों पर हाथ फेर रही थी । मुझे ऐसा मालूम होता था कि मेरी आँखें खुला ही चाहती हैं !

**पहला नाबीना**

यह रो कौन रहा है ?

**सबसे बुढ्ढी अंधी औरत**

वही पगली सिसक रही है ।

**पहला नाबीना**

और अभी तक उसे हक़ीक़त मालूम ही नहीं ।

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

मेरा ख़याल है कि हम सब यहीं मरेंगे !....

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

ग़ालिबन् कोई आयेगा....

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

और कौन आनेवाला है ?

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

यह नहीं मालूम ।

**पहला नाबीना**

मैं समझता हूँ कि बैरागिनें ख़ानक़ाह से आयेंगी....

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

वह शाम को बाहर नहीं निकलतीं।

**नौजवान अंधी औरत**

वह कभी बाहर नहीं निकलतीं।

**दूसरा नाबीना**

मेरा ख़याल है कि बड़ी रौशनी के मीनार से लोग हमें देख लेंगे।

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

वह अपने मीनार से नीचे नहीं आते।

**तीसरा नाबीना**

मुमकिन है हमें देख लें।

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

उनकी निगाह हमेशा समुंदर की तरफ़ रहती है।

**तीसरा नाबीना**

बड़ी सर्दी है।

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

सूखी पत्तियो की तरफ़ लगाओ। मेरा ख़याल है कि बर्फ़ गिर रही है।

**नौजवान अंधी औरत**

उफ़, ज़मीन कितनी सख़्त है।

**तीसरा नाबीना**

मैं अपने बायीं तरफ़ एक ऐसा शोर सुन रहा हूँ जो मेरी समझ में नहीं आता....

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

समुंदर लहरों से टकरा रहा है।

**तीसरा नाबीना**

मेरा ख़याल था कि औरतें रो रही होंगी।

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

मुझे बर्फ में लहरों से टूटने की आवाज़ सुनायी दे रही है।

**पहला नाबीना**

यह कौन इतनी ज़ोर से काँप रहा है। उसके मारे हम सब हिल रहे हैं।

**दूसरा नाबीना**

अब मैं अपने हाथों को नहीं खोल सकता।

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

मुझे एक और ग़ैर-मानूस[१] आवाज़ सुनायी दे रही है....

**पहला नाबीना**

यह हममें से कौन इस तरह काँप रहा है? पत्थर हिला जाता है।

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

शायद कोई औरत है।

---

१ अपरिचित

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

वही पगली सबसे ज़्यादा थरथरा रही है।

**तीसरा नाबीना**

मुझे लड़के की आवाज़ नहीं सुनायी देती।

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

शायद वह अभी तक दूध पी रहा है।

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

एक वही है जो देख सकता है कि हम कहाँ हैं।

**पहला नाबीना**

मुझे शुमाली हवा की आवाज़ आ रही है।

**छठवाँ नाबीना**

मेरा ख़याल है कि सितारे छिप गये। अब बर्फ़ गिरेगी।

**दूसरा नाबीना**

तब तो हमारा काम ही तमाम हुआ।

**तीसरा नाबीना**

अगर हममें से कोई सो जाये तो उसे फ़ौरन जगा देना चाहिए।

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

मुझे ज़ोर से नींद आ रही है।

(एक आँधी पत्तियों को उड़ा देती है।)

**नौजवान अंधी औरत**

तुम लोग सूखी पत्तियों की आवाज़ सुन रहे हो ? मेरा ख़याल है कोई हमारी तरफ़ आ रहा है।

**दूसरा नाबीना**

हवा है, कान लगाकर सुनो !

**तीसरा नाबीना**

अब कोई न आयेगा !

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

शायद काली सर्दी आ रही है ।

**नौजवान अंधी औरत**

मुझे किसी आदमी के दूरी पर चलने की आवाज़ सुनायी देती है ।

**पहला नाबीना**

मुझे सिर्फ़ सूखी पत्तियों की आवाज़ सुनायी देती है !

**नौजवान अंधी औरत**

मुझे किसी के क़दमों की आहट मिल रही है ।

**दूसरा नाबीना**

मुझे सिर्फ़ शुमाली हवा की आवाज़ सुनायी देती है ।

**नौजवान अंधी औरत**

मैं तुमसे सच कहती हूँ कोई हमारी तरफ़ आ रहा है !

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

मुझे भी किसी की बहुत धीमी चाल की आवाज़ सुनायी देती है ।

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

मेरा ख़याल है कि औरतें ठीक कहती हैं ।

( बर्फ़ के टुकड़े गिरने लगते हैं । )

**पहला नाबीना**

उफ़ उफ़ ! यह मेरे हाथों पर इतनी ठंडी कौन-सी चीज़ गिर रही है !

**छठवाँ नाबीना**

बर्फ़ है ।

**पहला नाबीना**

आओ और सिमटकर बैठें ।

**नौजवान अंधी औरत**

लेकिन क़दमों की आवाज़ की तरफ़ कान लगाओ ।

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

खुदा के लिए एक लमहा चुप हो जाओ ।

**नौजवान अंधी औरत**

क़रीब होती जाती है । हाँ, क़रीब होती जाती है । सुनो !

( दफ़अतन् पगली औरत का बच्चा अँधेरे में ज़ोर से रोने लगता है । )

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

बच्चा रो रहा है !

**नौजवान अंधी औरत**

वह देख रहा है, देख रहा है ! तब ही इतनी ज़ोर से रोता है । (वह बच्चे को अपनी गोद में ले लेती है और उस तरफ़ चलती है जिधर से क़दमों की आवाज़ आती हुई मालूम होती

है। दूसरी औरतें मुतफ़क्किर[१] अंदाज़ से उसके साथ चलती हैं और उसे घेर लेती हैं। ) मैं इस आवाज़ की तरफ़ जाती हूँ।

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

होशियार रहना।

**नौजवान अंधी औरत**

उफ़ ! कितनी ज़ोर से रोता है, क्या है ! मत रो बेटे ! डरो मत ! डरने की कोई बात नहीं है, हम सब तुम्हारे पास हैं। तुम क्या देख रहे हो ? डरो मत ! इस तरह मत रोओ ! तुम क्या देखते हो ? हमसे बतलाओ, आख़िर यह क्या चीज़ है ?

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

क़दमों की आवाज़ क़रीब आती जाती है, सुनो, ग़ौर से सुनो !

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

मुझे सूखी पत्तियों में किसी के कपड़ों की सरसराहट सुनायी देती है।

**छठवाँ नाबीना**

क्या कोई औरत है !

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

सिर्फ़ आदमियों की आवाज़ है।

**पहला नाबीना**

शायद समुंदर सूखी पत्तियों पर बह रहा है ?

---

१ चिन्तित

**नौजवान अंधी औरत**

नहीं नहीं, क़दमों की आवाज़ है, क़दमों की आवाज़ है ।

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

हमें अभी मालूम हुआ जाता है, सूखी पत्तियों की तरफ़ कान लगाये रहो ।

**नौजवान अंधी औरत**

सुन रही हूँ, सुन रही हूँ, ! बिलकुल पास ! सुनो सुनो ! बच्चे, तुम क्या देख रहे हो ? तुम क्या देख रहे हो ?

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

वह किस तरफ़ ताक रहा है ?

**नौजवान अंधी औरत**

वह क़दमों की आवाज़ ही की तरफ़ मुँह किये हुए है । देखो, देखो, जब मैं उसका मुँह फेर देती हूँ वह फिर उसी तरफ़ ताकने लगता है । वह देख रहा है, हाँ देख रहा है ! वह कोई अजीबो-ग़रीब चीज़ देख रहा है ।

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

( आगे बढ़कर ) उसे हमसे ऊपर उठा दो ताकि खूब देख सके ।

**नौजवान अंधी औरत**

हट जाओ ( वह बच्चे को अंधों की जमात से ऊपर उठाती है ) क़दमों की आवाज़ बिलकुल हमारे सामने आकर रुक गयी है....

**सबसे बुड्ढा नाबीना**

हाँ, वह बिलकुल हमारे सामने आ गयी, ठीक सामने ।

**नौजवान अंधी औरत**

तुम कौन हो ?

**सबसे बुड्ढी अंधी औरत**

हमारे ऊपर रहम करो !

( ख़ामोश )

( सन्नाटा है । बच्चा गला फाड़-फाड़कर रोने लगता है । )

●